भारत में धर्म (Religion in India)

TOPIC : भारत में धर्म

- धर्म का अर्थ
- वैश्वीकरण का भारतीय धर्म पर प्रभाव
- भारत में धार्मिक विविधता का स्वरूप

TOPIC

वैश्वीकरण का भारतीय धर्म पर प्रभाव

Effects of Globalization on Indian Religion

A. सकारात्मक प्रभाव

1. वैश्वीकरण- आधुनिक शिक्षा तथा तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार-

⬇

फलतः धर्म का तार्किकरण और धर्म से संबंधित रूढ़िगत मान्यताएँ कमजोर

2. वैश्वीकरण- धर्म का बाजारीकरण तथा संचार क्रांति द्वारा धर्म का प्रचार-प्रसार-

⬇

फलतः धार्मिक मान्यताओं का जन-जन तक पहुँचाना सरल, स्थानीय धार्मिक परम्पराओं का राष्ट्रीयकरण और उन्हें एक नयी पहचान प्राप्त

3. वैश्वीकरणजनित पहचान का संकट तथा धर्म का बाजारीकरण फलतः धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद में वृद्धि-

⬇

फलतः मानव की भलाई में धर्म के सकारात्मक पक्ष (Positive Aspects of Religion) का प्रयोग

(बाबा रामदेव द्वारा योग व आयुर्वेद का प्रचार, रविशंकर द्वारा Art of Living का प्रचार, समाज के नैतिक स्तर में वृद्धि आदि)

4. वैश्वीकरण- फलतः धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद-

⬇

फलतः व्यक्ति के पहचान संकट का समाधान (Solution to Identity Crisis) संभव

5. वैश्वीकरण- उपभोक्तावाद फलतः प्रतिस्पर्धा व व्यक्तिवादिता में वृद्धि और पारिवारिक विघटन, एकाकीपन, मानसिक तनाव व कुंठा में वृद्धि-

⬇

फलतः व्यक्ति के तनाव व कुंठा (Stress and Frustration) को दूर करने के साधन के रूप में धर्म के महत्व में वृद्धि और ढ़ेर सारे Cult और Sect का विकास।

B. नकारात्मक प्रभाव

1. वैश्वीकरण- बाजार अर्थव्यवस्था द्वारा धर्म का बाजारीकरण–

⬇

फलतः धर्म में ढेर सारे बाबाओं और पूजारियों का उद्भव एवं धर्म के नाम पर शोषण तथा धर्म में बाह्य आडम्बर में वृद्धि और उनका मौलिक पक्ष कमजोर

2. वैश्वीकरण- पहचान का संकट फलतः धर्म के महत्व में वृद्धि–

⬇

फलतः राजनीतिक दलों द्वारा धर्म का दुरूपयोग तथा धार्मिक कट्टरतावाद एवं साम्प्रदायिकता (Religious Fundamentalism and Communalism) में वृद्धि

3. वैश्वीकरण- धर्म का बाजारीकरण, धर्म का राजनीतिकरण, धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद तथा धार्मिक कट्टरतावाद में वृद्धि-

⬇

फलतः धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया कमजोर

4. वैश्वीकरण- आर्थिक विषमता, गरीबी व वंचन में वृद्धि और वंचित समूह धार्मिक आधार पर स्वंय को संगठित करके दबाव समूह के रूप में क्रियाशील-

⬇

फलतः साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरतावाद एवं धार्मिक आतंकवाद में वृद्धि

TOPIC : भारत में धर्मनिरपेक्षता

- धर्मनिरपेक्षता का अर्थ
- भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ व प्रकृति
- भारत में धर्मनिरपेक्षता की चुनौतियाँ
- धर्मनिरपेक्षता का लक्षण
- भारत में धर्मनिरपेक्षता का प्रभाव
- मूल्यांकन एवं सुझाव

धर्मनिरपेक्षता का अर्थ एवं लक्षण
Meaning and Characteristics of Secularism

धर्मनिरपेक्षता का अर्थ
(Meaning of Secularism)

विशिष्ट अर्थ में,

एक ऐसा सिद्धांत जिसके अंतर्गत राज्य का धर्म से पृथक्करण (Separation) पर बल दिया जाता है, धर्मनिरपेक्षता की संज्ञा दी जाती है।

इसके अंतर्गत दो तत्वों पर बल दिया जाता है-

⬇

1. राज्य में धर्म का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए
2. राज्य के लिए, सभी धर्म के लोग समान होने चाहिए

वृहद् अर्थ में,

एक ऐसा सिद्धांत, जिसके अंतर्गत सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों का धर्म से पृथक्करण (Separation) पर बल दिया जाता है, धर्मनिरपेक्षता कहलाता है

धर्मनिरपेक्षीकरण का अर्थ (Meaning of Secularization)

सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों से, धर्म के अतार्किक एवं अवैज्ञानिक प्रभावों (Irrational and Unscientific Effects of Religion) के उन्मूलन की प्रक्रिया को, धर्मनिरपेक्षीकरण कहते हैं

धर्मनिरपेक्षता का लक्षण (Characteristics of Secularism)

- आधुनिकीकरण की केन्द्रीय अवधारणा
- तर्कयुक्त चिन्तन पर बल
- अलौकिक एवं अधिप्राकृतिक सत्ता (Otherwordly and Supernatural Power) का विरोध
- इहलौकिकता (Worldliness) में विश्वास
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर निर्भरता में वृद्धि
- धर्म का तार्किकीकरण / धर्म का धर्मनिरपेक्षीकरण
  Rationalisation of Religion / Secularisation of Religion

भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ एवं प्रकृति (Meaning and Nature of Secularism in India)

भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ (Meaning of Secularism in India)

भारत में धर्मनिरपेक्षता को युरोप के अर्थ से भिन्न एक विशिष्ट अर्थ में अपनाया गया है, जहाँ विभिन्न धर्म के लोग, समानता, स्वतंत्रता एवं सहिष्णुता (Equality, Freedom and Tolerance) के साथ,

..... बिना एक दूसरे के धार्मिक विश्वास एवं मान्यताओं में बाधा उत्पन्न किये, एक राज्य का निर्माण करें, जिसका अपना कोई धर्म न हो और जिसके लिए सभी धर्म समान हो।

आजादी के बाद, इसी विशिष्ट अर्थ में, भारतीय संविधान में, भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य (Secular State) घोषित किया गया, जिसके तहत भारत राज्य, किसी विशिष्ट धर्म से संबंधित नहीं है और राज्य एवं धर्म में पृथक्कता विद्यमान है।

भारत में धर्मनिरपेक्षता की प्रकृति (Nature of Secularism in India)

भारत में धर्मनिरपेक्षता की प्रकृति पर दो स्वरूपों के संदर्भ में विचार किया जा सकता है–

1. सैद्धांतिक स्वरूप
2. व्यवहारिक स्वरूप

1. भारत में धर्मनिरपेक्षता का सैद्धांतिक / संवैधानिक स्वरूप (Theoretical/Constitutional Nature of Secularism in India)

1. भारतीय संविधान की प्रस्तावना, में 1976 में, 42वें संविधान संशोधन द्वारा, भारत के लिए एक 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' / Secular State की घोषणा की गयी है, जहाँ भारत का अपना कोई धर्म नहीं है
2. संविधान के समक्ष सभी समान है, और राज्य बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों को समान अधिकार एवं अवसर की समानता (Equal Rights and Equality of Opportunity) उपलब्ध करवाता है (अनुच्छेद 14-18)
3. सभी को अपने धर्म के पालन की स्वतंत्रता है (अनुच्छेद 25)
4. राज्य किसी के धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेगा (अनुच्छेद 26-27)
5. राज्य द्वारा सहायता प्राप्त शिक्षण संस्था धर्म से पृथक होंगे (अनुच्छेद 28)
6. राज्य किसी धार्मिक समुदाय (Religious Community) पर अपनी संस्कृति नहीं थोपेगा और सभी धार्मिक समूहों (Religious Groups) को अपना शिक्षण संस्थान (Educational Institute) स्थापित करने की स्वतंत्रता होगी (अनुच्छेद 30)

2. भारत में धर्मनिरपेक्षता का व्यावहारिक स्वरूप (Practical form of Secularism in India)

1. राज्य एवं धर्म में कानूनी पृथक्कता के बावजूद, राज्य एवं सरकार द्वारा किसी धार्मिक समूह विशेष पर कल्याण के नाम पर खर्च किया जाता है
2. सरकार द्वारा अल्पसंख्यक धर्म के शिक्षण संस्थान को अनुदान दिया जाता हैं
3. अल्पसंख्यकों द्वारा धर्म के आधार पर विशेष सुविधाओं (आरक्षण आदि) की माँग की जाती है और राज्य द्वारा उन्हें पूरा भी किया जाता है

4. तुष्टिकरण की नीति एवं चुनावी लाभ के लिए, धार्मिक समूहों को, धर्म के नाम पर विशेष सुविधाएँ दी जाती है और राजनीतिक दलों (Political Parties) द्वारा धर्म के आधार पर मतों की लामबंदी की जाती है

5. भारत में आज भी समान नागरिक संहिता (Uniform Civil Code) का अभाव है और कुछ धार्मिक समूहों के लिए व्यक्तिगत कानून (Personal Law) का प्रावधान है

समीक्षा (Evaluation)

भारत में धर्मनिरपेक्षता के उपरोक्त दोनों संदर्भ में भिन्नता के कारण, भारतीय राज्य की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति पर प्रश्न उठाया जाता है और कुछ लोगों द्वारा तो यहाँ तक कहा जाता है कि-

"भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य नहीं है।" (India is not a Secular State)

इस संदर्भ में निष्कर्ष है कि–

भारत निश्चित रूप से एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है, जो स्वयं को तटस्थ बनाये रखते हुए, सभी धर्मावलंबियों को अपने-अपने धार्मिक मान्यताओं के पालन की छूट देकर, विविधता में एकता के आदर्श की ओर अग्रसर है और.....

..... और दूसरी तरफ, धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के प्रसार के द्वारा एक धर्मनिरपेक्ष आधुनिक समाज (Secular Modern Society) के निर्माण की दिशा में भी क्रियाशील है।

भारत में धर्मनिरपेक्षता का व्यवहारिक स्वरूप (Practical Form), निश्चित रूप से धर्मनिरपेक्षता विरोधी प्रतीत होता है, लेकिन यहाँ यह उल्लेखनीय है कि,

लोकतांत्रिक राज्य समाज के अनुरूप होता है और जब तक भारतीय समाज में धर्म का प्रभाव बना रहेगा,

भारतीय राज्य से पूर्ण धर्मनिरपेक्ष क्रियाकलापों की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

इसीलिए भारत राज्य की गतिविधियाँ, कई संदर्भों में धर्मनिरपेक्षता विरोधी प्रतीत होती है, जो एक धर्मनिरपेक्ष भारतीय समाज के निर्माण के साथ स्वतः पूर्ण धर्मनिरपेक्ष हो जायेगी।

पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता एवं भारतीय धर्मनिरपेक्षता में अन्तर

Difference between Western Secularism and Indian Secularism

1. पश्चिमी समाज में धर्मनिरपेक्षता – तर्कसंगत एवं आधुनिक (Rational and Modern) हो रहे समाज से उत्पन्न,

जबकि भारतीय धर्मनिरपेक्षता– एक मुख्यतः धर्मप्रधान समाज (Religious Society) में राज्य द्वारा लागू

2. पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता – राज्य पर चर्च के अत्यधिक प्रभाव (Excessive Influence of the Church on the State) को ध्यान में रखकर,

जबकि भारतीय धर्मनिरपेक्षता – बहुधार्मिक (Multi Religious) भारतीय समाज की प्रकृति एवं तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर

3. पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता – सभी धर्मों के प्रति तटस्थता (Neutrality Towards all Religions) के सिद्धांत पर आधारित,

जबकि भारतीय धर्मनिरपेक्षता – सर्वधर्म सम्भाव (Sarvadharma Sambhav) के सिद्धांत पर आधारित

4. पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता – पूर्णतः अलगाववादी नकारात्मक धर्मनिपेक्षता,

जबकि भारतीय धर्मनिरपेक्षता में– सभी धर्मों का सम्मान और अन्तर धार्मिक समानता (Respect for all Religions and Inter-Religious Equality) पर बल

5. पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता – राज्य और धर्म के बीच पूर्ण पृथकता (Complete Separation between State and Religion) पर बल,

जबकि भारतीय धर्मनिरपेक्षता में– राज्य समर्थित धार्मिक सुधार (State Supported Religious Reform) पर बल और इस हेतु राज्य के संतुलित हस्तक्षेप का समर्थन (सबरीमाला मंदिर)